कथा सरिता

एक गिलास पानी और दुनिया

बात उस समय की है, जब सिकंदर आधी दुनिया जीतकर भारत आया था। एक दिन वह एक गांव से गुजर रहा था। अचानक उसकी नजर रास्ते के किनारे खड़े एक बूढ़े की ओर गई। उसकी दीन अवस्था देखकर सिकंदर को उस पर दया आ गई। उसने मंत्री को इशारा करके बुलाया और कहा, उस बूढ़े से पूछिए कि उसे क्या चाहिए। उसे जो चाहिए वह तुरंत दीजिए। आदेश के अनुसार मंत्री बूढ़े के पास आए और बोले, तुम्हें जो चाहिए मांग लो। आखिर चक्रवर्ती का आदेश है यह। चक्रवर्ती? कौनसा चक्रवर्ती? कहां का चक्रवर्ती? तुम नहीं जानते? वे चक्रवर्ती सिकन्दर हैं। आधी दुनिया जीती है उन्होंने। वह भी केवल बत्तीस साल की उम्र में। आधी ही दुनिया जीती है न? और बची हुई आधी कब जीतेगा? बूढ़े का वाक्य सुनकर सिकंदर तिलमिला गया। बोला, क्या आधी दुनिया जीतना कोई हंसी-खेल है? बूढ़े ने बोला, जरा सोचो कि तुम अपने इसी लश्कर के साथ शिकार पर गए हो। शिकार के लिए दौड़-धूप करके, दोपहर के समय तुम्हें बड़ी तेज प्यास लगती है। पास में पानी की बूंद नहीं। प्यास इतनी तेज है कि उसके बिना जान जाती-सी लगती है। उस समय मैं तुम्हें एक गिलास पानी पिलाता हूँ। बताओ, उस एक गिलास पानी के बदले, आप क्या दोगे मुझे? चक्रवर्ती ने हंसकर कहा, यह तो दूर की कौड़ी लाने वाली बात है। फिर भी ऐसी स्थिति में, मैं अपना आधा राज्य दे देता तुम्हें। वाह! तुम समझते हो कि आधे राज्य के लिए मैं कीमती, गिलास भर पानी देता तुम्हें? चक्रवर्ती जी कीमत बढ़ाइए। तभी वह पानी मिलेगा तुम्हें। थोड़ी देर सोचकर सिकंदर ने कहा, अगर मैं बिना पानी के मरने की स्थिति में होता तो तुम्हें पूरा राज्य दे देता। क्योंकि मरने के बाद मेरा राज्य मेरे किस काम आता? मैं उस गिलास भर पानी के लिए तुम्हें अपना पूरा राज्य दे देता। अब समझे, तुम्हारी जीती हुई आधी दुनिया का क्या मोल है? केवल एक गिलास पानी। और उसके लिए तुमने इतने लोगों की हत्या की? हजारों गांवों को उजाड़ा? हजारों बच्चों को अनाथ किया? 'पर वह तो...' सिकंदर ने कुछ बोलने की कोशिश की। पर उसे रोकते हुए वह बूढ़ा फिर बोला, मेरी तरफ देखो। मैंने पूरी दुनिया जीती है। मैं दुनिया बनाने वाले की शरण में गया हूँ। उसने मुझे अपना लिया है। दुनिया बनाने वाला ही जब मेरा हुआ तो यह पूरी दुनिया ही मेरी हुई।

बूढ़े की बात सुनकर चक्रवर्ती सिकंदर अवाक हो गया। उसने घुटने टेक कर भारत की उस आध्यात्मिक शक्ति को प्रणाम किया।

अवसर की पहचान

दो यात्री पैदल यात्रा कर रहे थे। उनका लक्ष्य था धन और सफलता। उनको एक वर मिला था कि इस यात्रा में उनको असीमित धन मिल सकता है, बशर्ते वे हर कार्य सावधानी से करें। शर्त यह भी थी कि वे कभी अपने स्थान से एक फीट से अधिक पीछे नहीं जा सकेंगे, नहीं तो तुरंत वहीं गिरकर ढेर हो जायेंगे। दोनों ने अपने आपको खाना, पानी आदि से लाद लिया और चल दिये। काफी चलने पर, अचानक एक बहुत ही पथरीली सड़क आई। वहां कई बोर्ड लगे थे। जिन पर लिखा था, जो इन पत्थरों को उठाएगा वह अंत में रोएगा। जो इनको नहीं उठाएगा वह भी रोएगा। एक यात्री ने कहा कि उठाओ तो रोना पड़ेगा, न उठाओ तो रोना पड़ेगा। इसलिए मैं तो एक छोटासा कंकड़ उठाकर जेब में रख लेता हूँ। दूसरा बोला कि जब दोनों हालत में रोना ही है, तो क्यों यह वजन पालूं? बीच-बीच में सड़क अच्छी हो जाती और कहीं-कहीं बोर्ड दिखाई पड़ते। यात्रा कठिन थी, लेकिन रोते-धोते आखिरी चरण पर पहुंचे तो सड़क एकदम अच्छी हो गई। कुछ आगे चले होंगे कि बड़े अक्षरों में 'यात्रा-समाप्त' लिखा दिख गया। उसके नीचे छोटे-अक्षरों में काफी कुछ लिखा था। वह इस प्रकार था - 'हे यात्री, तुमने जो पत्थर देखे थे, वे अमूल्य हीरे थे। यदि तुमने कुछ उठा लिये थे, तो उनको बेचकर धन और यश दोनों प्राप्त कर लो। याद रखना जो अवसर तुमने गंवा दिया, वह अब वापस नहीं मिल सकता।' जिसने एक भी 'पत्थर' नहीं उठाया था वह जोर से रोने लगा कि हे प्रभु मेरे कपड़ों में इतनी जेबें, पीठ पर इतने बड़े थैले थे लेकिन मैंने एक भी पत्थर नहीं उठाया। जिस चीज की चाह थी, उसे पहचान न पाया। जिसे थैलों में भर सकता था, उसे जेब तक मैं नहीं भरा। लेकिन जिसने एक छोटासा कंकड़ उठाया था वह इस बीच विक्षिप्त हो चुका था। इस सोच से कि उसने केवल एक कंकड़ ही क्यों उठाया।

विश्वास व सर्मपण के बल पर पाया संतत्व

मनुष्य लक्ष्य निर्धारित करता है और उन्हें पाने के लिए प्रयास भी करता है, लेकिन नाममात्र को ही लक्ष्य प्राप्ति में सफल होते हैं। जो असफल रहते हैं, वे अवसर और साधनों की कमी, भाग्य का साथ न देना जैसे कई कारण गिना देते हैं, किंतु जो सफल होते हैं, उनके आचरण में एक बात समान रूप से दिखाई देती है। वह है - लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण और विश्वास। ईसाई धर्म के महान संत और दार्शनिक थॉमस एक्विनास का जन्म एक अभिजात्य परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही उनकी प्रवृत्ति आध्यात्मिकता की ओर थी। जब थॉमस 17 वर्ष के हुए तो उन्होंने साधु जीवन जीने की इच्छा प्रकट की। उनके भाईयों ने यह सुनते ही नाराज होकर उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। इस दौरान उन्हें हर तरीके से समझाया गया, अनेक प्रलोभन दिए गए, किंतु थॉमस अपने निर्णय पर अटल रहे। यहां तक कि इस कैद के दौरान भी अपने समय का उपयोग उन्होंने प्रार्थना और स्वाध्याय में किया। आखिरकार परिजनों ने हार मान ली। थॉमस डोमिनिकन संप्रदाय के सदस्य बने और जल्द ही अपने समय के श्रेष्ठ संत और धर्मशास्त्री बन गए। पाश्चात्य संस्कृति की दार्शनिक धरोहरों में काफी महत्वपूर्ण मानी जाने वाली पुस्तक 'सम्मा थियोलॉजिका' की रचना थॉमस एक्विनास ने की। कथा का सार यह है कि गहन समर्पण और विश्वास होने पर व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति में अवश्य सफल होता है। विरोधी व्यक्ति या परिस्थितियां भी तब पराजित होकर उनका मार्ग छोड़ देती है।

नास्तिक की दिशा बदल गई

दो मित्र थे। एक बहुत धार्मिक प्रवृत्ति का था और सदैव प्रभु चिंतन में लगा रहता था, किंतु दूसरा घोर नास्तिक था। वह न कभी मंदिर जाता और न ही घर में पूजा-पाठ करता। दान-पुण्य में उसका कोई विश्वास नहीं था। उसने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य अधिक से अधिक धन अर्जित करना बना रखा था। वह दिन-रात पैसे कमाने में लगा रहता और भौतिक सुख-सुविधाओं से उसने अपना जीवन ऐश्वर्य व भोग-विलास का पर्याय बना लिया था। किंतु सुख व संतोष उसके जीवन में नहीं थे। इसके विपरीत आस्तिक मित्र अपनी निर्धनता में ही परम सुखी था। वह कम साधनों में संतुष्ट रहता और हमेशा ईश्वर की भक्ति में रमा रहता। एक दिन नास्तिक मित्र उसके घर मिलने आया और उसका साधारण-सा घर देखकर बोला - तुम्हारे त्याग की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। तुमने तो भगवान की भक्ति में सारी दुनियादारी छोड़ दी। फिर भी खुश कैसे रह लेते हो? यह सुनकर वह बोला - मित्र! मैं अपनी निर्धनता में बहुत प्रसन्न और संतुष्ट हूँ, किंतु त्याग तो तुम्हारा मुझसे भी बड़ा है क्योंकि तुमने तो दुनिया के लिए ईश्वर को ही छोड़ दिया। तुम कहो, प्रसन्न तो हो न? अपने मित्र की बात सुनकर नास्तिक को गहरा झटका लगा और उसे अपने असंतोष का कारण भी समझ में आ गया। उसी दिन से उसके जीवन की दिशा बदल गई और उसका हृदय ईश्वर की ओर उन्मुख हो गया।

कथा का सार यह है कि ईश्वर ही परम सत्ता है, जिसे अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही स्थितियों में याद रखा जाना चाहिए। उसकी कृपा से सदैव कल्याण ही होता है।

राजा सो गया

सिंकदर महान के पिता राजा फिलिप दरबार में किसी मुकदमे की सुनवाई कर रहे थे। लेकिन, सुनवाई के दौरान ही उन्हें नींद आ गई। इधर, सुनवाई भी चलती रही। जब सुनवाई समाप्त हो गई, तो उनकी नींद खुली और उन्होंने उस व्यक्ति को दंडित करने का निर्णय सुनाया। निर्णय सुनकर वह व्यक्ति बोला, महाराज, गलत निर्णय हुआ है। मैं इसके विरुद्ध अपील करूंगा। उसकी बात सुनकर राजा मुस्कुराते हुए बोले, मेरा निर्णय तो अंतिम होता है, तुम अपील किससे करोगे? वह व्यक्ति बोला, मैं जाग्रत राजा फिलिप से सोए हुए राजा फिलिप के खिलाफ अपील करूंगा। उस व्यक्ति का उत्तर सुनकर राजा फिलिप से कुछ कहते नहीं बना और बाद में अपने निर्णय में सुधार करते हुए उसे माफ कर दिया।

आगरा, म्यूजियम। जिलाधिकारी अजय चौहान को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मधु बहन।

हरदुआगंज। समाज सेवा प्रभाग के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व मंत्री जगवीर सिंह, राजेश यादव, राहुल गुप्ता, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.सुंदरी बहन तथा अन्य।

असंध। 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर प्रथम विजेता टीम के कोच को ट्रॉफी प्रदान करते हुए हरिचंद विटली।

अयोध्या। 'सर्व धर्म सम्मेलन' का उद्घाटन करते हुए रामजन्म भूमि के पुजारी महंत देवेन्द्र प्रसादाचार्य, क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.सुरेन्द्र, ब्र.कु.रामनाथ, ब्र.कु.विद्या बहन तथा अन्य।

बयाना। राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष बृजेंद्र सिंह सूपा को 'निमंत्रण कार्ड' भेंट करते हुए ब्र.कु.बबीता बहन।

सेक्टर - 7, आगरा। 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् 'प्रभु स्मृति' में खड़े हैं विधायक जगन प्रसाद गर्ग, पार्षद फौजी, ब्र.कु.सरिता बहन तथा अन्य।